कौंच

संस्कृत नाम : कपिकच्छु

हिन्दी : कौंच, केवांच

गुजराती : कौंचा

लेटिन : म्यूकुना प्रुरिटा (डनबनदं च्तनतपजं)

परिचय :-

कौंच अथवा केवाच जिसे किरमिच,खाजु कुहिली केचकुरी आहद जैसे नामो से जाना जाता है ।

लगभग सम्पूर्ण भारत वर्ष मे प्राकृतिक रूप से जगंलो मे पायीजाने वाली एक एसी लता है जिसके नाम भर से लोगो के रोगटे खड़े हो जाते हैं जनसामान्य मे इसे खुजली के पौधे के रूप मे जाना जाता है यह हिमालय कि निचली उष्ण घाटियों से लेकर भारत वर्ष के समस्त मैदानी क्षेत्रों मे प्रा-तिक रूप से पाई जाती है ।

कौंच एक एकवर्षीय लता है ।परन्तु यदि इसे निरंतर पानी आदि मिलता रहे तथा इसकी अच्छी प्रकार से देखभाल होती रहे तो यह कई वर्षो तक जीवीत रह सकती है ।

इसकी बेल हरी तथा बेलनाकार होती है अनुकूल वातावरण मिलने पर यह 20-25 फिट कि उचाई प्राप्त कर लेती है ।तथा काफी फैल जाती है पत्ते 3-5 इंच लम्बे 3 पत्तियों वाले, सेम के समान, रोयेंदार होते हैं।फूल 1-1) इंच लम्बे नीले या बैंगनी रंग के, आधा से एक फूल तक लम्बे डंठल पर आते हैं।

फली 2-3 इंच लम्बी डेढी, ऊपर घने रोम वाली होती है। अंदर पीलापन लिये सफेद या काले चपटे 5-6 बीज होते हैं।इसकी वर्षायु रोमश लटा सेम के सदृश, इसके पृष्ठभाग पर सघन रोम होते हैं जो शरीर से स्पर्श होते ही तीव्र कण्डू दाह और शोध उत्पन्न करते हैं।दिसम्बर जनवरी के दौरान इसके पत्ते सुख जाते है पर यदि इसे पानी तथा अनुकूल वातावरण मिले तो पुनः पत्ते आने लगते है ।

उपलब्धता एव जलवायु :-

कौंच का पौधा मुंख्यतः भारत के उष्ण प्रदेशो मे उगता व पनपता देखा जा सकता है इसके लिऐ मध्य भारत की जलवायु अधिक अनुकूल होती है तथा मध्य प्रदेश ,राजस्थान ,महाराष्ट्र ,बिहार, उड़ीसा ,उत्तरप्रदेश ,हरियाणा मे भी पाया जाता है।यह सभी प्रकार की मिटिट्यो ,उपजाउ अथवा अनुउपजाऊ रेतीली या कंकरीली ,पथरीली दोमट अथवा कपास्या में उग जाता है यही इस पौधे की विशेषता है कि पुर्णतया बंजर क्षेत्रो मे भी जहां और कोई फसल नहीं ली जा सकती, कौंच की फसल लेकर लाभ कमाया जा सकता है।

औषधिय गुण :-

कौंच एक औषधिय महत्व का पौधा है वस्तुतः इसका प्रत्येक भाग बीज ,फली का छिलका ,पत्ती तथा मुल आदि औषधिय गुणों से भरपुर है हालांकि इसका सर्वाधिक उपयोगि भाग इसका बीज तथा मूल है जो की शक्ति का महत्वपुर्ण स्त्रोत माने जाते है तथा वर्तमान मे शारीरिक दुर्बलता ,एव सामान्य दुर्बलता निवारण तथा वीर्य वृद्धि हेतु इसमें अनेको दवाईयां ,तथा टॉनिक बनाये जा रहे है ।जिसमे किसी न किसी रूप में कौंच के बीज ,अथवा मुल का उपयोग होता है।

शारीरीक दुर्बलता दुर करने तथा कामशक्ति बढ़ाने वाली दवाईयों के निर्माण के साथ साथ कौंच के बीजों तथा इसके मूल का उपयोग वातरोग, क्षयरोग , श्वास रोगों , क्षयरोगों ,श्वेतप्रदर , मुत्रकच्छ , शुक्रमेह ,उपदंश ,धातुक्षीणता को पूरा करने हेतु भी किया जाता है।इसके बीजों से लगभग 6 प्रतिशत निकाला जाता है जिसमे 22.4 प्रतिशत सेचुरेटेड फेट एसिड होते है ।

औषधिय प्रयोग -

वातव्याधि - कौंच की जड़ का काढा पीने से सब प्रकार का दर्द दूर हो जाते हैं।

वृक्कशोध : यदि गुर्दे में सूजन हो तो कौंच की जड़ का काढा बनाकर दें, मूत्र भी खुलकर आता है।

कौंच मृदुरेचक ,वजीकरण, मेघाबल्य ,उत्तेजक, कृमिघ्न ,मुत्रल, ग्राही है।

स्वाद :- तिक्त रस -मधुर

औषधि के रूप मे उपलब्धता :-

अभी तक कौंच के बीजों की आपूर्ती का एक ही माध्यम था इन्हे जंगल से प्राप्त करना परन्तु यह एक अत्यन्त कष्टदायक कार्य हैं क्योंकि कौंच का जरा सा रोआ भी व्यक्ती को दिन भर परेशान कर सकता है परन्तु कौंच बढ़ते जा रहे उपयोगो तथा इसकी आपुर्ती की तुलना इसकी मांग की अधिकता ने इसकी व्यवसायिक खेती की संभावनाओं को प्रबल बल दिया ।अत: कौच की फसल लेकर पर्याप्त लाभ कमाया जा सकता है ।इस प्रकार देखा जा सकता कौंच न केवल एक बहुपयोगी औषधीय पौधा है बल्कि इसकी खेती भी अत्यधिक लाभकारी है।

dkSap

oSKkfud uke
E;wdquk izqfjVk

jktLFkku ou mit laxzkgd ,oa ç'kks/kd lewg leFkZd lfefr

282] iqjkuk pqaxhukdk] Qrsgiqjk] mn;iqj ¼jkt-½
Qksu ,oa QSDl % 0294&2451478
email: samarthak@sancharnet.in
Website: www.samarathak.org

eqnzd % QkbZu vkVZ fizUVlZ] tkVokM+h] mn;- Qks-% 0294&2411406] 94602 64241